आत्मत्राण (रवींद्रनाथ ठाकुर)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में रवींद्रनाथ ठाकुर मानते हैं कि प्रभु में सबकुछ संभव कर देने की सामर्थ्य है, फिर भी वे यह कतई नहीं चाहते कि वही सबकुछ कर दें। वे कामना करते हैं कि किसी भी आपदा-विपदा में, किसी भी द्वंद्व में सफल होने के लिए संघर्ष वह स्वयं करे, प्रभु को कुछ न करना पड़े। उन्हें पता है कि तैरना चाहने वाले को पानी में कोई उतार तो सकता है, उसके आस-पास भी बना रह सकता है, लेकिन तैरना चाहने वाला जब स्वयं हाथ-पैर चलाता है, तभी तैराक बन पाता है। कवि प्रभु से क्या चाहता है, यही इस पाठ में बताया गया है।

काव्यांशों का भावार्थ

आत्मत्राण

1. विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ भय।
दुःख-ताप से, व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुःख को मैं कर सकूँ सदा जय।
कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष न हिले;
हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।।

भावार्थ–कवि प्रभु से कहता है–हे प्रभु! मैं आपसे यह प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ कि आप मुझे विपत्तियों से बचाएँ, बल्कि हे दयालु! मैं तो यह प्रार्थना करता हूँ कि उन विपत्तियों से कभी भयभीत न होऊँ। मैं यह भी नहीं चाहता कि दुख से तपते मेरे हृदय को आप सांत्वना दें, बल्कि यह चाहता हूँ कि उस दुख पर स्वयं विजय प्राप्त करूँ। हे करुणामय! यदि जीवन में मुझे कोई सहायक न मिले तो भी कभी मेरी हिम्मत न टूटे। यदि मुझे संसार में हानि ही उठानी पड़े, लाभ कभी भी न मिले तो भी हार न मानूँ।

2. मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करुणामय)
तरने की हो शक्ति अनामय।
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय–
वहन कर सकूँ इसको निर्भय।
नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दुःख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय।।

भावार्थ–कवि कहता है–हे करुणामय! मेरी आपसे यह प्रार्थना नहीं है कि आप प्रतिदिन कष्टों से मेरी रक्षा करें, बल्कि यह प्रार्थना है कि मेरे पास इन कष्टों से पार उतरने की अविकल शक्ति हो। मेरे

ऊपर उत्तरदायित्वों का जो भार है, उसे कम करके भले ही आप मुझे सांत्वना न दें, लेकिन इतनी अनुकंपा अवश्य करना कि मैं निडर होकर उन दायित्वों का वहन कर सकूँ। सुख के दिनों में भी मैं नतमस्तक होकर आपकी सुंदर छवि को निहारता रहूँ, आपसे कभी विमुख न होऊँ। हे प्रभु! जब कभी मैं दुखों की काली रात से घिर जाऊँ और यह सारा संसार भी मुझे धोखा दे जाए, उस विकट समय में भी मेरी आपके प्रति आस्था बनी रहे, आपके अस्तित्व के प्रति मेरे मन में संशय उत्पन्न न हो।

शब्दार्थ

विपदा = विपत्ति, मुसीबत। **करुणामय** = दूसरों पर दया करने वाला। **दुःख-ताप** = कष्ट की पीड़ा। **व्यथित** = दुःखी। **चित्त** = मन। **सांत्वना** = दिलासा। **पौरुष** = पराक्रम। **वंचना** = वंचित। **क्षय** = नाश। **त्राण** = भय निवारण, बचाव। **अनुदिन** = प्रतिदिन। **तरने** = पार करना। **अनामय** = रोग रहित। **लघु** = कम। **अनुनय** = विनय। **वहन** = उठाना। **नत शिर** = सिर झुकाकर। **दुःख-रात्रि** = दुख से भरी रात/दुख रूपी रात। **निखिल** = संपूर्ण।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो (करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ भय।
दुःख-ताप से, व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे (करुणामय)
दुःख को मैं कर सकूँ सदा जय।
कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष न हिले;
हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।।

1. **काव्यांश में कौन ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है–**
   (क) एक बालक (ख) एक भक्त
   (ग) स्वयं कवि (घ) एक किसान।
2. **विपदा के विषय में कवि ईश्वर से क्या प्रार्थना करता है–**
   (क) मुझे विपदा से बचा लेना
   (ख) विपदा में मेरी सहायता करना
   (ग) मैं विपदा में कभी भयभीत न होऊँ
   (घ) विपदा मेरे लिए वरदान बन जाए।
3. **कवि किस पर विजय पाने की प्रार्थना करता है–**
   (क) शत्रुओं पर (ख) मित्रों पर
   (ग) इंद्रियों पर (घ) दुखों पर।
4. **कवि कैसी स्थिति में बल-पौरुष न हिलने की प्रार्थना करता है–**
   (क) जब सामने शत्रु खड़ा हो
   (ख) जब कोई सहायक न मिले
   (ग) जब हानि हो जाए
   (घ) जब सफलता न मिले।
5. **पद्यांश के कवि का नाम है–**
   (क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) महादेवी वर्मा
   (ग) रवींद्रनाथ ठाकुर (घ) कैफ़ी आजमी।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ग)।

(2) मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करुणामय)
तरने की हो शक्ति अनामय।
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय–
वहन कर सकूँ इसको निर्भय।
नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दुःख-रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूँ नहीं कुछ संशय।।

1. **कवि ईश्वर से नहीं चाहता कि–**
   (क) वे प्रतिदिन उसका त्राण करें
   (ख) वे उसे तरने की शक्ति दें
   (ग) वे उसे भार वहन करने की शक्ति दें
   (घ) वे उसे विपदा में निर्भय करें।
2. **कवि कैसे समय में ईश्वर को एक पल के लिए भी नहीं भूलना चाहता–**
   (क) सुख के दिनों में (ख) दुख के दिनों में
   (ग) विपदा के दिनों में (घ) विफलता के समय में।
3. **समस्त संसार के विमुख हो जाने पर भी कवि चाहता है कि–**
   (क) ईश्वर उसके साथ रहें
   (ख) उसका मनोबल न टूटे
   (ग) उसके मन में ईश्वर के प्रति संशय न हो
   (घ) वह सुखी और स्वस्थ रहे।
4. **काव्यांश में कवि ईश्वर से किसको वहन करने की शक्ति माँगता है–**
   (क) सुख को (ख) दुख को
   (ग) उत्तरदायित्व को (घ) इनमें से किसी को नहीं।
5. **'दुख-रात्रि' में अलंकार है–**
   (क) रूपक (ख) उपमा
   (ग) यमक (घ) उत्प्रेक्षा।

उत्तर– 1. (क) 2. (क) 3. (ग) 4. (ग) 5. (क)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'आत्मत्राण' कविता के कवि का नाम है–**
   (क) सुमित्रानंदन पंत (ख) रवींद्रनाथ टैगोर
   (ग) वीरेन डंगवाल (घ) मैथिलीशरण गुप्त।
2. **रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म कब हुआ–**
   (क) सन् 1865 में (ख) सन् 1863 में
   (ग) सन् 1861 में (घ) सन् 1864 में

3. **रवींद्रनाथ जी को नोबेल पुरस्कार किस रचना पर मिला–**
(क) नैवेद्य (ख) बलाका
(ग) क्षणिका (घ) गीतांजलि।

4. **'आत्मत्राण' कविता के अनुवादक का नाम है–** ***(CBSE 2023)***
(क) रवींद्रनाथ ठाकुर
(ख) रवींद्रनाथ सिंह
(ग) हज़ारीप्रसाद द्विवेदी
(घ) हज़ारीप्रसाद चतुर्वेदी।

5. **'आत्मत्राण' कविता में कवि अपने व्यथित चित्त के लिए ईश्वर से क्या माँगता है–** ***(CBSE 2023)***
(क) दुःख का सामना करने हेतु सामर्थ्य
(ख) दुःख का सामना करने हेतु सांत्वना
(ग) दुःख का सामना करने हेतु करुणा
(घ) दुःख का सामना करने हेतु वंचना।

6. **कवि ईश्वर से क्या प्रार्थना करता है–**
(क) विपदा में भयभीत ने होने की
(ख) दुःख पर विजय पाने की
(ग) हानि में भी हार न मानने की
(घ) उपर्युक्त सभी।

7. **कवि दुःख-ताप से व्यथित चित्त के लिए क्या नहीं माँगता–**
(क) शांति (ख) सुख
(ग) सांत्वना (घ) शीतलता।

8. **कवि ईश्वर से किस अनामय शक्ति की याचना करता है–**
(क) शत्रु पर विजय प्राप्त करने की
(ख) कविता रचने की
(ग) धन अर्जित करने की
(घ) कष्टों से पार उतरने की।

9. **कवि सुख के दिनों में भी कैसा बना रहना चाहता है–**
(क) ईश्वर के प्रति निष्ठावान् (ख) नास्तिक
(ग) उदासीन (घ) इनमें से कोई नहीं।

10. **रवींद्र संगीत किसको कहा जाता है–**
(क) गीतों को (ख) कविताओं को
(ग) रवींद्र के गीतों को (घ) इनमें से कोई नहीं।

11. **'आत्मत्राण' कविता मूलरूप से किस भाषा में रचित है–**
(क) हिंदी (ख) मराठी
(ग) गुजराती (घ) बाँग्ला।

12. **'आत्मत्राण' कविता का हिंदी में अनुवाद किसने किया–**
(क) आचार्य विनोबा भावे ने
(ख) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने
(ग) जयशंकरप्रसाद ने
(घ) महादेवी वर्मा ने।

13. **अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना के अलावा हम और क्या करते हैं–**
(क) मेहनत करते हैं
(ख) दूसरों से प्रेरणा लेते हैं
(ग) आत्मविश्वास पर भरोसा करते हैं
(घ) उपर्युक्त सभी।

14. **'आत्मत्राण' कविता में किस रस की प्रधानता है–**
(क) वीर रस की (ख) शृंगार रस की
(ग) शांत रस की (घ) हास्य रस की।

15. **रवींद्रनाथ की इस कविता की शैली है–**
(क) भावात्मक
(ख) आत्मकथात्मक
(ग) व्यंग्यात्मक
(घ) भावात्मक एवं आत्मकथात्मक।

16. **कवि संकटों का सामना कैसे करना चाहता है–**
(क) ईश्वर की कृपा से (ख) मित्रों की सहायता से
(ग) स्वयं (घ) परिवार की सहायता से।

17. **कवि किसके न हिलने की प्रार्थना करता है–**
(क) चट्टान के (ख) पर्वत के
(ग) धरती के (घ) आत्मबल के।

18. **'आत्मत्राण' कविता का केंद्रीय भाव है–**
(क) प्रार्थना और अनुनय
(ख) दीनता और याचना
(ग) दया और करुणा
(घ) स्वाभिमान और आत्मविश्वास।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (क) **6.** (घ) **7.** (ग) **8.** (घ) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (घ) **12.** (ख) **13.** (घ) **14.** (ग) **15.** (घ) **16.** (ग) **17.** (घ) **18.** (घ)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'आत्मत्राण' शीर्षक की सार्थकता कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2017)***

उत्तर : प्रस्तुत कविता का शीर्षक 'आत्मत्राण' बिलकुल सही है। 'आत्मत्राण' का अर्थ है–अपनी रक्षा स्वयं करना। प्रस्तुत कविता में कवि दुखों और विपत्तियों से बचाने के लिए, उत्तरदायित्वों का भार कम करने के लिए ईश्वर के सामने गिड़गिड़ाता नहीं, बल्कि वह उनसे आत्मत्राण की सामर्थ्य माँगता है, ताकि स्वयं अपने दुःखों पर विजय प्राप्त कर सके और अपने दायित्वों को निभा सके। इसलिए कविता का शीर्षक उचित और सटीक है।

प्रश्न 2 : कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर : कवि अपने आराध्य ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि वे उसे आपत्तियों से न बचाएँ, बल्कि आत्मत्राण की शक्ति प्रदान करें। वे उसके दायित्वों का भार कम न करें, बल्कि उन दायित्वों को वहन करने की सामर्थ्य प्रदान करें। उसे सुख-दुख, लाभ-हानि में अविचल रहने की शक्ति दें तथा उसकी आस्था को दृढ़ बनाए रखें।

प्रश्न 3 : आपके द्वारा इस पाठ्यक्रम में पढ़ी गई किस कविता की अंतिम पंक्तियाँ आपको सर्वाधिक प्रभावित करती हैं और क्यों? अपने विचार व्यक्त कीजिए। ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : हमारे द्वारा पाठ्यक्रम में पढ़ी गई कविता 'आत्मत्राण' की अंतिम पंक्तियों ने हमें सर्वाधिक प्रभावित किया है। इन पंक्तियों में कवि ने ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था व्यक्त की है। कवि कहता है कि चाहे सुख हो या दुःख, मैं तुम्हें एक पल के लिए भी न भूलूँ। तुम्हारे अस्तित्व पर कभी संशय न करूँ। भक्त की ईश्वर के प्रति ऐसी आस्था दर्शनीय है।

प्रश्न 4 : 'आत्मत्राण' कविता में चारों ओर से दुःखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी अपने आपसे क्या अपेक्षा करता है?

उत्तर : 'आत्मत्राण कविता में चारों ओर से दुःखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी अपने आपसे अपेक्षा करता है कि उसके मन में ईश्वर की आस्था और श्रद्धा-भक्ति दृढ़ बनी रहे, उसके मन में ईश्वर के अस्तित्व के प्रति शंका उत्पन्न न हो।

प्रश्न 5 : अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप प्रार्थना के अतिरिक्त और क्या-क्या प्रयास करते हैं? लिखिए।

उत्तर : अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए हम प्रार्थना के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रयास करते हैं–

(i) हम धन और अन्य संसाधन जुटाने का प्रयास करते हैं।

(ii) शिक्षा-प्रशिक्षण आदि के द्वारा अपनी योग्यता को बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

(iii) सच्चे मित्रों और सहायकों का साथ प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

(iv) अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति को बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

(v) अत्यधिक परिश्रम करते हैं; क्योंकि 'परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।'

प्रश्न 6 : 'आत्मत्राण' कविता में कवि क्या-क्या कामना करता है?

उत्तर : कवि इस कविता में ईश्वर से कामना करता है कि वे उसे दुख सहने और उनका मुक़ाबला करने की शक्ति दें, उत्तरदायित्वों को वहन करने का सामर्थ्य दें, सुख में अहंकार से मुक्त रखें तथा अपने प्रति उसकी आस्था को दृढ़ बनाए रखें।

प्रश्न 7 : 'नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।'–भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव**–कवि चाहता है कि जब उसके जीवन में सुख आएँ तो वह उस समय भी परमात्मा के प्रति श्रद्धावान् बना रहे। वह परमात्मा के चरणों में विनयपूर्वक झुके। वह सुख के प्रत्येक पल में भी परमात्मा का स्मरण करता रहे। प्रायः लोग सुख में परमात्मा को भूल जाते हैं। वे अपनी शक्ति पर घमंड करने लगते हैं। कवि की कामना है कि वह ऐसे घमंड से बचा रहे।

प्रश्न 8 : क्या कवि की प्रार्थना (आत्मत्राण) आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है? यदि हाँ, तो कैसे? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : हाँ, हमें यह प्रार्थना अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है; क्योंकि अन्य प्रार्थनाओं में प्रार्थी ईश्वर के सामने दीन-हीन होकर गिड़गिड़ाता है और अपना दुख हरने तथा सभी मनोरथ पूर्ण करने की प्रार्थना करता है। वह अपने सभी कार्य ईश्वर से ही सिद्ध कराना चाहता है। लेकिन इस प्रार्थना में कवि ऐसा नहीं करता। वह ईश्वर से अपने दुख दूर करने और अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण करने की प्रार्थना नहीं करता है, बल्कि वह उनसे इतनी शक्ति और सामर्थ्य माँगता है कि स्वयं आत्मत्राण कर सके। इसीलिए यह प्रार्थना अन्य प्रार्थनाओं से भिन्न है।

प्रश्न 9 : 'आत्मत्राण' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : 'आत्मत्राण' कविता के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। उसे ईश्वर ने बल, बुद्धि और विवेक दिया है। मनुष्य को अपने दुख निवारण और रक्षण के लिए ईश्वर को नहीं पुकारना चाहिए, बल्कि उनसे इतनी शक्ति और सामर्थ्य माँगनी चाहिए कि वह स्वयं आत्मत्राण कर सके।

प्रश्न 10 : रवींद्रनाथ ठाकुर और मीरा की भक्ति का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए। ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : रवींद्रनाथ ठाकुर की भक्ति में पूर्ण आस्था और विश्वास है। वे ईश्वर की सामर्थ्य से परिचित हैं, लेकिन फिर भी ईश्वर से कुछ कराना नहीं चाहते। वे ईश्वर पर आश्रित नहीं होना चाहते हैं। वे सामर्थ्य प्राप्त करना चाहते हैं, ताकि स्वयं आत्मत्राण कर सकें। वे ईश्वर से भौतिक सुखों की कामना नहीं करते हैं। वे मानव-मन की कमज़ोरियों से मुक्ति पाना चाहते हैं।

मीरा की भक्ति दैन्य और माधुर्य भाव की है। वह अपने आराध्य श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन करती हैं। वह कभी अपने आराध्य से मनुहार करती हैं और कभी उन्हें उलाहना भी देने लगती हैं। वह अपने गिरधर गोपाल के अनन्य और एकनिष्ठ प्रेम से अभिभूत हैं। मीरा की भक्ति में पूर्ण समर्पण है। वह आत्मरक्षा के लिए अपने आराध्य से गुहार लगाती हैं।

प्रश्न 11 : विपदाओं में कवि ईश्वर से क्या कामना करता है?

उत्तर : विपदाओं में कवि ईश्वर से कामना करता है कि वे उसे विपदाओं से न बचाएँ, बल्कि इतनी शक्ति दें कि वह दुखों से बिलकुल न डरे और उन पर विजय प्राप्त कर ले। कवि का मानना है कि दुख तो जीवन के अभिन्न अंग हैं, उनसे बचने का प्रयास नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें सहन करना चाहिए।

प्रश्न 12 : कवि सहायक के न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है?
(CBSE 2016)

अथवा **'आत्मत्राण' कविता में कोई सहायक न मिलने पर कवि की क्या प्रार्थना है?** ***(CBSE 2017)***

उत्तर : कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि यदि मुझे जीवन में कोई सहायक न मिले तो कोई बात नहीं, आप इतनी कृपा करना कि मेरा पुरुषार्थ और मेरी हिम्मत कभी न टूटे; क्योंकि मनुष्य का आत्मबल ही उसका सच्चा सहायक होता है। आत्मबल से युक्त मनुष्य को किसी अन्य सहायक की आवश्यकता नहीं होती है।

प्रश्न 13 : अंत में कवि क्या अनुनय करता है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : अंत में कवि ईश्वर से अनुनय करता है–हे ईश्वर! आप मेरे उत्तरदायित्व के भार को कम न करें, बल्कि उसे वहन करने की शक्ति प्रदान करें। सुख के दिनों में भी मैं आपके प्रति नतमस्तक रहूँ। अहंकार से भरकर आपसे विमुख न होऊँ। दुख के समय में जब सारा संसार मुझे धोखा दे जाए, उस समय भी आपके प्रति मेरी आस्था दृढ़ बनी रहे, मैं आपके अस्तित्व के प्रति शंका न करूँ।

प्रश्न 14 : 'आत्मत्राण' कविता का कवि ईश्वर से सांसारिक सुखों की प्रार्थना न करते हुए, क्या निवेदन कर रहा है? इससे उसके चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है? ***(CBSE 2023)***

उत्तर : 'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर से सांसारिक सुखों की प्रार्थना न करते हुए ऐसी सामर्थ्य प्राप्त करना चाहता है, जिससे वह स्वयं आत्मत्राण कर सके। वह सफलता के लिए ईश्वर पर आश्रित नहीं रहना चाहता, बल्कि स्वयं संघर्ष करना चाहता है। इससे कवि के आत्मबल, संघर्षशीलता और भौतिक सुखों से विरक्तता का पता चलता है।

प्रश्न 15 : 'हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में न मानूँ क्षय।'–भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव**—कवि चाहता है कि यदि उसे जीवनभर लाभ न मिले, यदि वह सफलता से वंचित रहे और क़दम-दर-कदम हानि पहुँचती रहे तो भी उसके मन में उस हानि से उत्पन्न निराशा के नकारात्मक भाव न आएँ, बल्कि उसके मन में ईश्वर के प्रति आस्था, आशा और स्वयं पर विश्वास बना रहे।

प्रश्न 16 : 'तरने की हो शक्ति अनामय
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।'–भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव**—कवि कामना करता है कि यदि प्रभु उसे दुख में सांत्वना न दें, तो न सही। सांत्वना के अभाव में उसके जीवन का दुख-भार कम न हो तो न सही, परंतु उसके मन में दुखों से उबरने की सबल शक्ति अवश्य हो। वह अपने दुखों पर अपने आत्मबल से विजय पा सके।

प्रश्न 17 : 'आत्मत्राण' कविता में किसी सहायक पर निर्भर न रहने की बात कवि क्यों कहता है? स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2020)***

उत्तर : 'आत्मत्राण' कविता में किसी सहायक पर निर्भर न रहने की बात कवि इसलिए कहता है, क्योंकि वह आत्मबल प्राप्त करना चाहता है। दूसरों पर निर्भर रहने से आत्मबल समाप्त हो जाता है। आत्मबल के अभाव में व्यक्ति न तो अपनी रक्षा कर सकता है और न ही दूसरों की। कवि स्वयं आत्मत्राण करना चाहता है। वह दूसरों पर निर्भर रहकर नहीं किया जा सकता। इसलिए कवि सहायक पर निर्भर न रहने की बात करता है।

प्रश्न 18 : कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ईश्वर से दुख कम करने की प्रार्थना नहीं करते। वे उनसे क्या माँगते हैं और क्यों?

उत्तर : कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ईश्वर से दुख कम करने की प्रार्थना नहीं करते। वे उनसे दुखों से न डरने और उन्हें सहन करने की शक्ति माँगते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं; क्योंकि सुख-दुख जीवन के अनिवार्य अंग हैं। जब मनुष्य सुखों को खुशी से भोग लेता है तो उसे दुखों को भी सहन करना चाहिए। दुखों में ईश्वर को नहीं पुकारना चाहिए। कवि ईश्वर से दुख हरने की बात नहीं करता, बल्कि उनसे ऐसा आत्मबल माँगता है, जिसके द्वारा वह दुखों पर विजय प्राप्त कर सके और स्वयं आत्मत्राण कर सके। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, सभी ने जीवन में धैर्यपूर्वक कष्टों को झेला है। दुख की अग्नि में तपकर ही मानव-जीवन कुंदन बनता है। इसलिए भी कवि दुखों से बचना नहीं चाहता।

प्रश्न 19 : 'आत्मत्राण' कविता हमें क्या प्रेरणा देती है? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : 'आत्मत्राण' कविता एक अत्यंत प्रेरणादायी प्रार्थना गीत है। कवि ने पाठकों को यह प्रेरणा दी है कि मनुष्य को निराशावादी न होकर सदैव संघर्षशील होना चाहिए। ईश्वर में सदैव उसकी आस्था रहे, भले ही सुख हो अथवा दुख। सुख के दिनों में प्रायः लोग ईश्वर को भूल जाते हैं और कष्ट के समय में उस पर दोषारोपण करने लगते हैं। प्रायः लोग प्रभु से यही चाहते हैं कि वे सबकुछ ठीक कर दें और उन्हें स्वयं कुछ भी न करना पड़े। कवि का मानना है कि मनुष्य को अपने आंतरिक बल तथा पौरुष पर विश्वास होना चाहिए। यदि ईश्वर से कुछ माँगना ही है तो यही माँगे कि वह उसे इस संसार में अपना अस्तित्व बनाए रखने तथा प्रत्येक विपरीत स्थिति में संघर्ष करने के लिए मनोबल बनाए रखने की शक्ति दे। ईश्वर के सामर्थ्यवान् होने पर संदेह न हो और साथ-साथ अपनी शक्ति पर भी विश्वास बना रहे। इस प्रकार व्यक्ति को प्रत्येक विषम परिस्थिति में भी ईश्वर तथा अपनी शक्ति दोनों पर विश्वास बनाए रखना चाहिए।

प्रश्न 20 : 'आत्मत्राण' कविता का केंद्रीयभाव अपने शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर : 'आत्मत्राण' गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित एक प्रार्थना गीत है। इस गीत में कवि ने यह भाव व्यक्त किया है कि प्रभु में सबकुछ संभव कर देने की शक्ति है, फिर भी व्यक्ति को यह कामना नहीं करनी चाहिए कि सबकुछ ईश्वर ही कर दें। किसी भी आपदा-विपदा में और किसी भी द्वंद्व में सफल होने के लिए व्यक्ति को स्वयं संघर्ष करना चाहिए, ताकि ईश्वर को कुछ न करना पड़े। कवि चाहता है कि ईश्वर के प्रति आस्था रखते हुए व्यक्ति उनके सामने अपनी रक्षा के लिए न गिड़गिड़ाए, बल्कि उनसे ऐसी शक्ति की प्रार्थना करे, जिससे स्वयं आत्मत्राण कर सके।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(I) जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।
सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै।।

1. **जब मैं था, तब कौन नहीं था–**
   (क) तुम नहीं थे (ख) हरि नहीं थे
   (ग) अँधियारा नहीं था (घ) कोई नहीं था।
2. **'अँधियारा' किसका प्रतीक है–**
   (क) कालिमा (ख) कलंक
   (ग) अज्ञान (घ) रात्रि।
3. **काव्यांश में दुखिया कौन है–**
   (क) संसार के लोग (ख) कबीरदास
   (ग) तुलसीदास (घ) गरीब लोग।
4. **'खायै अरू सोवै' का भाव है–**
   (क) सांसारिक सुखों में डूबे रहना
   (ख) खाकर सो जाना
   (ग) कुछ न खाना
   (घ) हमेशा सोते रहना।

(II) 'मनुष्य मात्र बंधु है' यह बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

5. **सबसे बड़ा विवेक क्या है–**

(क) मनुष्य मात्र को अपना बंधु मानना
(ख) केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना
(ग) अच्छे-बुरे की पहचान करना
(घ) किसी से कोई संबंध न रखना।

6. **सब मनुष्य परस्पर बंधु है; क्योंकि–**

(क) सब एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं
(ख) सब एक साथ रहते हैं
(ग) सब एक ही परमपिता परमेश्वर की संतान हैं
(घ) सबको एक ही माता ने जन्म दिया है।

7. **मनुष्यों के बाह्य भेद का क्या कारण है–**

(क) जन्म-स्थान की भिन्नता
(ख) जन्म के समय की भिन्नता
(ग) धर्म की भिन्नता
(घ) कर्म-फल की भिन्नता।

8. **सबसे बड़ा अनर्थ क्या है–**

(क) जीवों की हत्या करना
(ख) एक भाई द्वारा दूसरे भाई की व्यथा न हरना
(ग) झूठ बोलना
(घ) कर्तव्य का पालन न करना।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

9. **कबीर के गुरु कौन थे–**

(क) रामदास (ख) रामानंद
(ग) परमानंद (घ) देवानंद।

10. **'पोथी पढ़ि-पढ़ि' में अलंकार है–**

(क) यमक (ख) अनुप्रास
(ग) श्लेष (घ) उपमा।

11. **'नरहरि' में 'हरि' का अर्थ है–**

(क) हरापन (ख) विष्णु
(ग) सिंह (घ) हरण करना।

12. **मीरा किसकी चाकरी करना चाहती हैं–**

(क) राम की (ख) गिरधारीलाल की
(ग) राजा की (घ) पति की।

13. **मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब हुआ–**

(क) सन् 1880 में (ख) सन् 1882 में
(ग) सन् 1885 में (घ) सन् 1886 में।

14. **राजा उशीनर ने क्या दान किया–**

(क) सोना (ख) चाँदी
(ग) अपने शरीर का मांस (घ) वस्त्र।

15. **'पर्वत प्रदेश में पावस' के कवि हैं–**

(क) सुमित्रानंदन पंत (ख) मैथिलीशरण गुप्त
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) ऋतुराज।

16. **पारद के पर फड़फड़ाकर कौन उड़ गया –**

(क) भूधर (ख) मोर
(ग) हंस (घ) बगुला।

17. **'विरासत' का अर्थ है–**

(क) नई वस्तु
(ख) महँगी वस्तु
(ग) विदेशी वस्तु
(घ) पूर्वजों से मिली वस्तु।

18. **तोप पर घुड़सवारी कौन करता है–**

(क) सैनिक (ख) चौकीदार
(ग) छोटे बच्चे (घ) बड़े बच्चे।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–*

19. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? कबीर की साखी में 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इनका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

20. मीरा श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

21. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

अथवा 'मनुष्यता' कविता का प्रतिपाद्य लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

22. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता का केंद्रीयभाव लगभग बीस शब्दों में लिखिए।

23. वर्षा ऋतु में इंद्र की जादूगरी के दो उदाहरण दीजिए।

24. कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?

25. 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया' इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?